अध्याय 8 — मित्रता की पहली दरार

सोमवार की सुबह कॉलेज में विद्यार्थियों की चहल-पहल थी।

वीर और ईशा प्रांगण में एक वृक्ष के नीचे बैठे आरव और काव्या की प्रतीक्षा कर रहे थे।

वीर बार-बार अपने हाथ में बंधी घड़ी देख रहा था।

ईशा ने पूछा—

“आज तुम्हें समय की इतनी चिंता क्यों हो रही है?”

“आरव ने जन्मदिन पर घड़ी दी थी। सोचा, कभी इसका उपयोग भी कर लिया जाए।”

ईशा हँसने लगी।

“घड़ी तुम्हें समय देखने के लिए दी थी, प्रत्येक दो मिनट में देखने के लिए नहीं।”

तभी आरव और काव्या वहाँ पहुँचे।

वीर ने खड़े होकर कहा—

“आइए महाराज! आज फिर सात मिनट की देरी।”

आरव ने आश्चर्य से पूछा—

“तुम मेरा समय देखने के लिए घड़ी पहनते हो या अपना?”

“जब से तुमने दी है, तुम्हारी देरी का अभिलेख रखने के लिए पहनता हूँ।”

चारों हँसने लगे।

कुछ देर बाद युवराज भी वहाँ पहुँचा। आज उसके चेहरे पर सामान्य दिनों जैसी प्रसन्नता नहीं थी।

उसने सभी का अभिवादन किया, लेकिन काव्या से कोई विशेष बातचीत नहीं की।

काव्या ने भी रविवार की बातचीत का उल्लेख करना उचित नहीं समझा।

उसे लगा कि युवराज उसकी बात समझ गया होगा।

लेकिन वास्तविकता इसके विपरीत थी।

युवराज ने अपनी भावनाओं को शांत नहीं किया था। उसने केवल उन्हें छिपाना सीख लिया था।

भविष्य का अवसर

कक्षा में अध्यापक ने विद्यार्थियों को एक महत्वपूर्ण सूचना दी।

"अगले महीने हमारे कॉलेज में एक विशेष प्रतियोगिता आयोजित होने वाली है। विभिन्न व्यावसायिक संस्थाओं के प्रतिनिधि भी इसमें उपस्थित होंगे।"

विद्यार्थियों में उत्सुकता बढ़ गई।

अध्यापक ने आगे बताया—

"आपको चार या पाँच विद्यार्थियों के समूह में एक ऐसी योजना प्रस्तुत करनी होगी, जिससे समाज की किसी वास्तविक समस्या का समाधान किया जा सके।

विजेता समूह को आर्थिक पुरस्कार के साथ आगे उस योजना पर कार्य करने का अवसर भी मिलेगा।"

वीर ने धीरे से आरव से कहा—

"आर्थिक पुरस्कार सुन लिया न? अब तुम्हें हमारे लिए कुछ सोचना ही पड़ेगा।"

आरव मुस्कुराया।

कक्षा समाप्त होने के बाद सभी इस प्रतियोगिता के विषय में चर्चा करने लगे।

ईशा ने सुझाव दिया—

“हम शिक्षा से संबंधित कोई योजना बना सकते हैं।”

काव्या ने कहा—

“या फिर उन लोगों से संबंधित, जो आर्थिक कठिनाइयों के कारण उपचार नहीं करवा पाते।”

आरव कुछ सोच रहा था।

युवराज ने कहा—

“तुम लोग इतनी छोटी समस्याओं पर क्यों विचार कर रहे हो? हमें शक्तियों से संबंधित कोई बड़ी योजना बनानी चाहिए।”

आरव ने उसकी ओर देखा।

“शिक्षा और उपचार की समस्याएँ छोटी हैं?”

“मेरा वह अर्थ नहीं था। मैं कह रहा हूँ कि हमें ऐसी योजना बनानी चाहिए जिससे अधिक धन कमाया जा सके।”

आरव ने उत्तर दिया—

“धन कमाना भी आवश्यक है। लेकिन यदि हमारी योजना से किसी की समस्या का समाधान ही नहीं होगा, तो उसका उद्देश्य क्या होगा?”

वीर ने दोनों को देखते हुए कहा—

“प्रतियोगिता अगले महीने है। कृपया आज ही युद्ध प्रारंभ मत कर देना।”

सभी हँस पड़े।

काफी विचार-विमर्श के बाद उन्होंने निर्णय लिया कि वे एक ऐसी योजना बनाएँगे जिससे आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीक और शिक्षा की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा सकें।

युवराज को यह विषय विशेष पसंद नहीं आया, लेकिन उसने विरोध नहीं किया।

वह इस समूह में बने रहना चाहता था।

सहायता या नियंत्रण?

अगले कुछ दिनों तक सभी मित्र प्रतियोगिता की तैयारी में व्यस्त रहे।

कॉलेज की कक्षाओं के बाद वे पुस्तकालय में बैठते, जानकारी एकत्र करते और अपनी योजना को बेहतर बनाने का प्रयास करते।

एक दिन युवराज अपने साथ कुछ महँगे इलेक्ट्रॉनिक उपकरण लेकर आया।

उसने सभी के सामने उन्हें रख दिया।

"अब हमें पुराने उपकरणों पर काम करने की आवश्यकता नहीं है।"

वीर ने आश्चर्य से पूछा—

"ये सभी हमारे लिए हैं?"

"हाँ। तुम लोगों को जिन वस्तुओं की आवश्यकता होगी, मैं उपलब्ध करवा दूँगा।"

ईशा प्रसन्न हो गई।

"इससे हमारा कार्य बहुत सरल हो जाएगा।"

आरव ने भी युवराज का धन्यवाद किया।

"बहुत अच्छी बात है। हम इनका उपयोग कर सकते हैं।"

युवराज ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—

"और एक बात। मैंने सोचा है कि प्रतियोगिता में हमारे समूह का नेतृत्व मैं करूँगा।"

कुछ क्षणों के लिए सभी शांत हो गए।

काव्या ने पूछा—

"लेकिन हमने तो अभी नेतृत्व के विषय में कोई निर्णय नहीं लिया है।"

युवराज ने सहजता से उत्तर दिया—

“निर्णय लेने की क्या आवश्यकता है? सबसे अधिक खर्च मैं कर रहा हूँ। आवश्यक वस्तुएँ मैं उपलब्ध करवा रहा हूँ। ऐसी स्थिति में नेतृत्व भी मुझे ही करना चाहिए।”

आरव ने उसकी ओर देखा।

“युवराज, तुम्हारी सहायता महत्वपूर्ण है। लेकिन बाकी लोगों का परिश्रम भी उतना ही महत्वपूर्ण है।”

“तो तुम्हारे अनुसार मेरे धन का कोई मूल्य नहीं है?”

“मूल्य है। लेकिन उसके कारण बाकी लोगों का महत्व कम नहीं हो जाता।”

युवराज ने पूछा—

“फिर नेतृत्व कौन करेगा? तुम?”

आरव ने सिर हिलाया।

“आवश्यक नहीं। जिस व्यक्ति को हमारी योजना की सबसे अच्छी समझ होगी और जो इसे सबसे अच्छे ढंग से प्रस्तुत कर सकेगा, उसे नेतृत्व करना चाहिए।”

ईशा ने आरव का समर्थन किया।

वीर और काव्या भी सहमत थे।

युवराज को लगा जैसे सभी मिलकर उसका विरोध कर रहे हों।

उसने मेज पर रखे उपकरणों की ओर देखा और कहा—

“ठीक है। जब मेरे योगदान का कोई विशेष महत्व नहीं है, तो तुम लोग अपने पुराने उपकरणों से ही काम कर लो।”

वह अपनी लाई हुई वस्तुएँ उठाने लगा।

आरव ने उसे रोकने का प्रयास नहीं किया।

“यह तुम्हारा निर्णय है, युवराज। हम फिर भी अपना कार्य पूरा करेंगे।”

युवराज कुछ क्षण आरव को देखता रहा।

उसे अपेक्षा थी कि आरव उसे रोकेगा, शायद अपनी बात वापस ले लेगा।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

युवराज अपने उपकरण लेकर वहाँ से चला गया।

पुस्तकालय में कुछ देर शांति बनी रही।

वीर ने लंबी साँस लेते हुए कहा—

"लगता है अब हमें थोड़ा अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।"

आरव मुस्कुराया।

"तो कर लेंगे।"

मित्रता का आधार

उस शाम चारों मित्र कॉलेज के बाहर अपनी पुरानी चाय की दुकान पर बैठे थे।

ईशा कुछ चिंतित थी।

"युवराज को शायद हमारी बात बुरी लगी है।"

वीर ने कहा—

"मुझे तो समझ नहीं आता कि उसके पास इतना सब कुछ होने के बाद भी वह प्रत्येक बात में स्वयं को सबसे आगे क्यों रखना चाहता है।"

काव्या ने उत्तर दिया—

"संभव है उसे बचपन से यही सिखाया गया हो कि जिसके पास सबसे अधिक धन और शक्ति होती है, वही सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है।"

आरव चुपचाप उनकी बातें सुन रहा था।

फिर उसने कहा—

"यदि ऐसा है, तो शायद उसे अच्छे मित्रों की हमसे भी अधिक आवश्यकता है।"

वीर ने आश्चर्य से पूछा—

“इतना सब होने के बाद भी तुम उसकी चिंता कर रहे हो?”

“हाँ। किसी की गलत सोच का विरोध करना और उस व्यक्ति से घृणा करना, दोनों अलग बातें हैं।”

ईशा ने पूछा—

“लेकिन यदि वह कभी तुम्हें अपना मित्र समझता ही न हो तो?”

आरव कुछ क्षण शांत रहा।

“तब यह उसका निर्णय होगा। मैंने मित्रता अपनी ओर से की है।”

चाय की दुकान के वृद्ध संचालक उनकी बातें सुन रहे थे।

उन्होंने चाय रखते हुए कहा—

“बेटा, मित्रता में यह मत देखना कि तुम्हारे साथ बैठने वाला व्यक्ति कितना शक्तिशाली है। यह देखना कि जब तुम कमजोर पड़ जाओगे, तब भी क्या वह तुम्हारे साथ बैठेगा?”

चारों मित्र एक-दूसरे की ओर देखकर मुस्कुराए।

वीर ने कहा—

“हमारे समूह में तो यदि कोई कमजोर पड़ा, बाकी तीन उसे इतना परेशान करेंगे कि वह स्वयं खड़ा हो जाएगा।”

सभी हँसने लगे।

कुछ समय के लिए वे युवराज और प्रतियोगिता की चिंता भूल गए।

बदलता हुआ व्यवहार

अगले दिन युवराज कॉलेज आया, लेकिन वह अपने पुराने मित्र समूह के पास नहीं गया।

वह कॉलेज के कुछ धनवान विद्यार्थियों के साथ बैठा था।

उनमें से अधिकांश के पास खरीदी हुई शक्तियाँ थीं।

उनकी बातचीत महँगी गाड़ियों, नई शक्तियों और बड़े व्यावसायिक परिवारों के विषय में चल रही थी।

एक विद्यार्थी ने युवराज से पूछा—

"आजकल तुम उन चारों के साथ बहुत समय बिता रहे थे। क्या हुआ?"

युवराज ने उत्तर दिया—

"कुछ नहीं। बस यह समझने का प्रयास कर रहा था कि साधारण लोग किस प्रकार सोचते हैं।"

दूसरे विद्यार्थी ने हँसते हुए कहा—

"उन्हें समझकर क्या करोगे? उन्हें तो हमारे जैसा बनने में पूरा जीवन लग जाएगा।"

युवराज मुस्कुराया।

तभी उसकी दृष्टि कुछ दूरी पर बैठे आरव और उसके मित्रों पर पड़ी।

चारों अपनी प्रतियोगिता की योजना पर कार्य कर रहे थे। बीच-बीच में हँस भी रहे थे।

युवराज को देखकर काव्या ने हाथ हिलाया और उसे अपने पास आने का संकेत दिया।

लेकिन युवराज ने केवल हाथ हिलाकर अभिवादन किया और वहीं बैठा रहा।

उसके साथ बैठे एक विद्यार्थी ने पूछा—

"वह लड़की तुम्हारी मित्र है?"

युवराज ने उत्तर दिया—

"हाँ।"

"और वह लड़का?"

युवराज ने आरव की ओर देखते हुए कहा—

“अभी तो वह भी मेरा मित्र ही है।”

उसके चेहरे पर एक विचित्र मुस्कान थी।

एक छोटी सी प्रसन्नता

शाम को आरव और काव्या बाजार की ओर निकल गए।

मार्ग में काव्या एक दुकान के बाहर रुक गई। वहाँ एक सुंदर सा छोटा कंगन रखा था।

आरव ने पूछा—

“पसंद आया?”

“हाँ, अच्छा है।”

आरव दुकान के भीतर जाने लगा।

काव्या ने उसका हाथ पकड़ लिया।

“अरे! मैंने केवल अच्छा कहा है, खरीदने के लिए नहीं कहा।”

आरव ने हँसते हुए कहा—

“लेकिन यदि तुम्हें पसंद है तो खरीद सकते हैं।”

काव्या ने मूल्य देखा और सिर हिला दिया।

“अभी नहीं। जब हम अपनी पहली कमाई करेंगे, तब तुम मेरे लिए खरीदना।”

आरव ने पूछा—

“इतनी प्रतीक्षा करोगी?”

“यदि तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करनी है, तो उसमें भी प्रसन्नता है।”

आरव कुछ देर उसे देखता रहा।

फिर उसने कहा—

“ठीक है। लेकिन अपनी पहली कमाई से तुम मुझे क्या दोगी?”

काव्या सोचने का अभिनय करने लगी।

“एक अलार्म घड़ी!”

“वह क्यों?”

“ताकि तुम्हें प्रतिदिन कॉलेज आने के लिए दादाजी को न जगाना पड़े।”

दोनों हँस पड़े।

कुछ दूरी पर सड़क किनारे खड़ी एक महँगी कार में युवराज बैठा था।

उसने दोनों को देख लिया था।

कुछ देर पहले वह स्वयं उसी दुकान से होकर निकला था।

वहाँ रखी अधिकांश वस्तुएँ उसके लिए इतनी साधारण थीं कि उसने उनकी ओर ध्यान भी नहीं दिया था।

लेकिन आरव और काव्या उसी छोटी सी दुकान के बाहर इतने प्रसन्न थे।

युवराज के मन में पुनः वही प्रश्न उत्पन्न हुआ।

आखिर आरव के पास ऐसा क्या था, जो उसके पास नहीं था?

एक खतरनाक विचार

रात में युवराज अपने कमरे में बैठा था।

उसने अपनी शक्तियों की जानकारी दिखाने वाला उपकरण सामने रखा।

उसमें उसकी सभी शक्तियों और उनकी शेष क्षमता का विवरण था।

उसके पास इतनी शक्तियाँ थीं कि कोई साधारण व्यक्ति उसके सामने खड़े होने का साहस भी नहीं कर सकता था।

फिर भी आरव उससे कभी भयभीत नहीं हुआ।

उसे अपने पिता की कही हुई बात स्मरण हुई—

“मनुष्य स्वयं के लिए बहुत कुछ सहन कर सकता है। लेकिन जिनसे वह प्रेम करता है, उनके लिए वही मनुष्य बहुत विवश भी हो सकता है।”

युवराज ने अपना मोबाइल उठाया।

उसने कॉलेज में खींचे गए कुछ चित्र देखने प्रारंभ किए।

एक चित्र में आरव अपने तीनों मित्रों के साथ खड़ा था।

युवराज कुछ देर उस चित्र को देखता रहा।

“तुम्हें स्वयं के लिए किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है, आरव। इसीलिए तुम मेरे सामने झुकते नहीं हो।”

उसने चित्र में वीर और ईशा की ओर देखा।

फिर उसकी दृष्टि काव्या पर जाकर रुक गई।

“लेकिन देखते हैं, जब बात तुम्हारे मित्रों की आएगी, तब भी क्या तुम इतने ही निडर रह पाओगे?”

उसने मोबाइल बंद कर दिया।

अब तक युवराज आरव से श्रेष्ठ बनकर काव्या के जीवन में अपना स्थान बनाना चाहता था।

लेकिन अब उसके मन में एक नया विचार जन्म ले चुका था।

यदि वह आरव को उसकी अपनी दृष्टि में असहाय सिद्ध कर दे, तो शायद काव्या भी उसे पहले जैसा सम्मान नहीं देगी।

अगली बार वह आरव के आत्मसम्मान पर नहीं, उसकी भावनाओं पर प्रहार करने वाला था।

लेकिन युवराज यह नहीं जानता था कि कभी-कभी किसी व्यक्ति की सबसे बड़ी कमजोरी ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति बन जाती है।

अध्याय **8** समाप्त।